गजल : अपनों को दूर मत करिये

-शांति स्वरूप मिश्र
सरकारी सेवा के उपरान्त सेवानिवृत्त, तत्पश्चात पूर्णरूपेण हिंदी साहित्य के लिए समर्पित।कविता, ग़ज़ल, शायरी एवं कहानियां आदि का सृजन, ग़ज़ल संग्रह : जुगनू टिम टिम, अंधेरों के दरमियाँ, कहानी संग्रह : आत्मबोध
https://sahityacinemasetu.com/ghazal-apno-ko-dur-mat-kariye/

किसी की रूह को इतना भी, चूर मत करिये
इंसान हो कर भी हैवां सा, कसूर मत करिये

अच्छा हो अपने कद का भी, अंदाज़ कर लो,
देख अपना ही लम्बा साया, गुरूर मत करिये

यारा समझ कर कि, अब तो तुम ख़ुदा हो गए,
झूठी शान में आके, अपनों को दूर मत करिये

न भूलिए वक़्त की चालें, बड़ी अजीब हैं दोस्त
खुद की ऊंचाइयों पे इतना, फ़ितूर मत करिये

निकलती है हर मंज़िल की राह, इनके नीचे से
कभी जमीं से अपने कदमों को, दूर मत करिये

यूं नमक छिड़कने का काम, अब छोड़ दो 'मिश्र'
ये ज़ख्म तो भर जायेंगे, इन्हें नासूर मत करिये